श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मन्दिर (बेग़मपुरा साहिब)
सीर गुरवरधनपुर काशी वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

श्री गुरु रविदास जी का आगमन माघ की पूर्णमासी संवत 1433 बिक्रमी भाव जनवरी 1377 ई. को हुआ। वाराणसी इसका पुराना नाम था। पुनः इस को बनारस कहा जाने लगा और अब पुनः 1971 ई. में इस का नाम बनारस से बदल कर वाराणसी रखा गया है। गुरु रविदास जी के समय इस को बनारस कहा जाता था। वाराणसी से भाव वरणा और असि नदियों के ऊपर बसा हुआ शहर। कई ग्रंथों में इस को पवित्र जलपुरी भी कहा गया है। जालन्धर (पंजाब) से वाराणसी 1172 किलोमीटर दूर है। वाराणसी रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर की दूरी पर लंक्का चौराहे में गुरु जी की स्मरण में बड़ा सुन्द्र गेट बना हुआ है। गेट से 2 कि.मी. की दूरी पर सात खंड जन्म स्थान मंद्र सुशोभित है। अब इस संपूर्ण मन्दिर के स्वर्ण से आरोपित करने का कार्य चल रहा है।

बेग़मपुरा संकल्प के आदिवासी ब्रह्मज्ञानी चिंतक सतिगुरु साहिबानों की पावन वाणी और विचारधारा तथा बेग़मपुरा संकल्प की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले रहबरों के अमूल्य योगदान के प्रचार और प्रसार का केंद्र।

BEGUMPURA MISSION : A RELIGIOUS & SOCIAL INFORMATION CENTER

संस्था की वैबसाईट - www.begumpuramission.com संस्था का चैनल - begumpura mission (youtube channel)

अमृत रस बाणी

श्री गुरु रविदास जी स्टीक (हिन्दी)

अमृत रस बाणी

श्री गुरु रविदास जी स्टीक (हिन्दी)

(रजि: नं. 179-2006-07)

प्रकाशक : श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)

गांव : बिनपालके, निकट भोगपुर, ज़िला जालन्धर (पंजाब)-144201

अमृत रस बाणी
श्री गुरु रविदास जी
स्टीक {हिन्दी}

बेग़मपुरा संकल्प अभियान

यह स्टीक साहिब नि:शुल्क प्राप्त करें।

श्री गुरु रविदास जी के 650वें प्रकाश पर्व तथा आदि धर्म की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। इस पवित्र अवसर पर आइए, सतगुरु रविदास जी की वाणी के इस पवित्र स्टीक को नि:शुल्क प्राप्त कर संगतों तक पहुँचाएँ और बेग़मपुरा के संकल्प की पूर्ति हेतु अपना योगदान दें।

इसे मराठी, तेलुगु, कन्नड़, गुजराती, मलयालम, तमिल अथवा अन्य भाषाओं में भी नि:शुल्क प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए आपको इस लिखित सामग्री का अनुवाद, कंप्यूटर टाइपिंग एवं सेटिंग करवा कर देनी होगी। इसे नि:शुल्क प्राप्त करने तथा अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिए कृपया संपर्क करें।

हरबंस हीरा, वुल्वरहैम्पटन (यू.के.)
मोबाइल : +44 7779 271356
ईमेल : Harbans.heera@gmail.com

Print Code 07H

Amrit Ras Bani

Sri Guru Ravidass Ji Satik {Hindi}

By : Charanjit Singh Binpalke

© सर्वाधिकार संस्था के लिए सुरक्षित हैं

द्वितीय संस्करण 1 जनवरी, 2026 (संख्या = 5500)
श्री गुरु रविदास जी के 650वें प्रकाश पर्व एवं आदि धर्म के 100वें स्थापना दिवस को समर्पित

भेट = निःशुल्क

प्रकाशक -
श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि:)
मुख्य दफ़्तर : गांव बिनपालके, निकट भोगपुर,
ज़िला जालन्धर (पंजाब) - 144201
मो. 078141-42944, 098725-88620

PDF उपलब्ध : www.begumpuramission.com

मुद्रक एवं कंप्यूटर डिज़ाइनिंग :
वालिया इंटरप्राईज़िज़, जालंधर, मो. 098153-78692

विषय सूची

क्र.नं.	विवरण	पृष्ठ
*	समर्पण	6
*	गुरबाणी महा-प्रचार के दानी...	9
*	आदि धर्म - मूल निवासियों के संघर्ष की एक गौरवशाली यात्रा	11
	1. रागु मिरी रागु	
1.	तोही मोही मोही तोही अंतर कैसा...	15
	2. रागु गाउड़ी	
2.	मेरी संगति पोच सोच दिनु राती...	16
3.	बेग़मपुरा सहर को नाउ...	18
4.	घट अवघट डूगर घणा...	20
5.	कूप भरिओ जैसे दादिरा...	22
6.	सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार...	24
	3. रागु आसा	
7.	मृग मीन भृंग पतंग कुंचर	29
8.	संत तुझी तनु संगति प्रान...	32
9.	तुम चन्दन हम इरंड बापुरे	33
10.	कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु...	35
11.	हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे...	37
12.	माटी को पुतरा कैसे नचतु है...	38

	4. रागु गूजरी	
13.	दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ...	40
	5. रागु सोरिठ	
14.	जब हम होते तब तू नाही...	42
15.	जओ हम बांधे मोह फास...	45
16.	दुलभ जनमु पुन्न फल पाइओ...	48
17.	सुख सागरू सुरतर चिंतामनि...	50
18.	जउ तुम गिरिवर त्यो हम मोरा...	52
19.	जल की भीति पवन का थंम्भा...	54
20.	चमरटा गांठि ना जनई...	56
	6. रागु धनासरी	
21.	हम सरि दीनु दइआल ना तुम सरि...	58
22.	चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो...	59
23.	नामु तेरो आरती मजनु मुरारे...	61
	7. रागु जैतसरी	
24.	नाथ कछूअ ना जानउ...	64
	8. रागु सूही	
25.	सह की सार सुहागनि जानै...	67
26.	जो दिन आवहि सो दिन जाही...	69
27.	ऊचे मंदर साल रसोई...	71
	9. रागु बिलावलु	
28.	दारिदु देखि सभ को हसै...	73

29.	जिह कुल साधु बैसनो होइ।।	75
	10. रागु गोंड	
30.	मुकंद मुकंद जपहु संसार।।	77
31.	जे ओहु अठसठि तीर्थ न्हावै।।	80
	11. रागु रामकली	
32.	पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ...	82
	12. रागु मारू	
33.	ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै...	85
34.	सुख सागर सुरितरु चिंतामनि...	86
	13. रागु केदारा	
35.	खटु करम कुल संजुगतु है...	89
	14. रागु भैरउ	
36.	बिनु देखे उपजै नही आसा...	91
	15. रागु बसंतु	
37.	तुझहि सुझंता कछू नाहि...	94
	16. रागु मलार	
38.	नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं...	97
39.	हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति...	99
40.	मिलत पिआरो प्रान नाथु...	102
*	**सलोक**	104

समर्पण

गुरबाणी की यह पावन स्टीक साहिब, शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी के 650वें प्रकाश पर्व तथा आदि धर्म के 100 वर्षीय स्थापना दिवस को समर्पित है।

श्री गुरु रविदास जी की पवित्र वाणी जहाँ समूचे विश्व को मानव समानता, स्वतंत्रता, निर्भयता-निर्वैरता, चिंता-मुक्त एवं आनंदमय जीवन का क्रांतिकारी संदेश प्रदान करती है, वहीं यह आध्यात्मिक उत्कर्ष और आत्मिक मुक्ति का अमूल्य स्त्रोत भी है।

आदि धर्म की सौ वर्षीय यात्रा भारत के आदिवासी एवं मूल निवासी समाज के भीतर स्वाभिमान, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, शिक्षा की चेतना, सामाजिक न्याय तथा संवैधानिक जागरूकता का सशक्त प्रतीक रही है।

यह समर्पण संगतों को सत्य, सेवा, सांझेदारी और संघर्ष के मार्ग पर दृढ़ता से चलते हुए अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु सतत प्रेरणा प्रदान करता है।

स्नेहिल एवं मधुर स्मृति में यह पावन प्रेम-भेंट

श्री गुरु रविदास जी की पवित्र वाणी पर टीका सहित सुसज्जित यह पावन गुटका साहिब, गुरु जी के 650वें शताब्दी प्रकाश पर्व तथा आदि धर्म के 100 वर्षीय स्थापना दिवस को केंद्र में रखते हुए, संगतों को नि:शुल्क भेंट करने की सेवा श्री निर्मल बाली जी द्वारा अपने गुरप्रवासी माता-पिता – श्रीमती नंती बाली जी एवं श्रीमान कर्म चंद बाली जी, निवासी कोट खुर्द, जिला जालंधर (पंजाब) की स्नेहिल एवं मधुर स्मृति में समर्पित की जा रही है।

यह समर्पण उनके आदरणीय माता-पिता के संघर्षमय, सेवाभावी, सत्यनिष्ठ, सरल तथा सत्संगतिपूर्ण जीवन को अर्पित एक सच्ची श्रद्धांजलि है।

श्री निर्मल बाली जी का यह विशिष्ट एवं नि:स्वार्थ प्रयास, श्री गुरु रविदास जी की वाणी में निहित आध्यात्मिक एवं क्रांतिकारी दर्शन के अमूल्य उपदेशों को संगतों तक पहुँचाने तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्थायी और अनमोल स्त्रोत सिद्ध होगा।

अमृत रस बाणी संबंधी बेनती

इस पावन स्टीक सहित (गुटका साहिब) में श्री गुरु रविदास महाराज जी के, आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अंकित 40 शब्द और 1 श्लोक शामिल हैं। प्रत्येक शब्द के नीचे उसकी संक्षिप्त व्याख्या दी गई है, जिससे पाठक को बाणी का भाव (अर्थ) सहज रूप से समझने में सहायता मिलेगी।

प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से, संगत को भी बाणी का भाव-अर्थ सुनाने में यह संग्रह अत्यंत मददगार सिद्ध होगा। यह संग्रह इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि छोटी कक्षा का बच्चा भी इस पावन बाणी का अर्थ सरलता से सुना सके।

अमृत-रस बाणी का नितनेम करने संबंधी प्रार्थना

अमृत समय (प्रातः) और शाम को स्नान करके या कम से कम हाथ-मुँह धोकर -इस पावन बाणी के शब्द ऊँची आवाज़ में पढ़ें। अपनी श्रद्धा और समय के अनुसार - 5 शब्द, 11 शब्द या सभी शब्द पढ़े जा सकते हैं। शब्दों का पाठ करने के बाद 'सतिनाम' का सिमरन करें और फिर अरदास करें। यह नितनेम प्रतिदिन एक निश्चित समय पर करें।

प्रकाशन हेतु सूचना - बेग़मपुरा संकल्प की पूर्ति हेतु इस पवित्र स्टीक को मराठी, तेलुगु, कन्नड़, गुजराती, मलयालम, तमिन, बंगाली, नेपाली, उड़िया, असमिया, उर्दू, भोजपुरी अथवा अन्य भाषाओं में निःशुल्क प्राप्त करने के लिए इस का विवरण इसके पृष्ठ 1 पर पढ़े।

अंग्रेज़ी अक्षर -	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
हिन्दी अक्षर -	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

गुरबाणी महा-प्रचार के दानी सज्जनों का धन्यवाद

ज्ञान का दान सबसे उत्कृष्ट दान है परंतु जब यह दान गुरु साहिबान की बाणी के ज्ञान के प्रचार हेतु दिया जाए तो यह और भी महान हो जाता है। जिस किसी को यह ज्ञान का दान दिया जाता है, उसका यह ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता, चाहे वह इसे जितना भी अधिक प्रयोग करे - इसमें सदैव वृद्धि ही होती है, यहाँ तक कि वह स्वयं भी ज्ञान का दानी बन जाता है। एक प्रज्वलित दीप से हम अनगिनत दीपक प्रज्वलित कर सकते हैं। वास्तव में गरीबी, भूखमरी और गुलामी आदि की जड़ अज्ञानता ही है। सतगुरु रविदास जी की अमृत रस बाणी जहाँ मानवता को परम-परमात्मा से जोड़ती है, वहीं मनुष्य सामाजिक और आर्थिक स्तर को भी ऊँचा, खुशहाल और सम्मानजनक बनाती है, जो मनुष्य श्री गुरु रविदास जी की विचारधारा को धारण करता है, संसार की कोई शक्ति उस के उत्कर्ष को रोक नहीं सकती।

संस्था श्रीमान निर्मल बाली जी की अत्यंत आभारी है, जिन्होंने अपने गुरप्रवासी माता-पिता- माता श्रीमती नंती बाली जी एवं पिता श्री करम चंद बाली जी, निवासी कोट खुर्द, ज़िला जालंधर, पंजाब-की स्नेहमयी एवं मधुर स्मृति

में यह स्टीक साहिब संगतों को नि:शुल्क भेंट किया है।

संस्था वुल्वरहैम्पटन, इंग्लैंड की उन सभी संगतों का भी हृदय से धन्यवाद करती है, जिन्होंने इस स्टीक साहिब को प्रकाशित कराने एवं संगतों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

हमें आशा है कि श्रीमान निर्मल बाली जी की भांति अन्य दानशील संगतें भी आगे आकर ऐसे गुरबाणी स्टीक साहिब प्रकाशित करवा कर संगतों को भेंट करेंगी तथा गुरबाणी के इस महान प्रचार अभियान में निरंतर अपना योगदान देती रहेंगी।

इन वैचारिक एवं आर्थिक दानदाताओं पर हमें अत्यंत गर्व है।

चरणजीत सिंह बिनपालके
महा सचिव
श्री गुरु रविदास मिशन प्रचार संस्था पंजाब (रजि.)
मुख्य दफतर : गांव बिनपालके (भोगपुर)
ज़िला जालंधर (पंजाब)
www.begumpuramission.com
25-12-25 **मोबाइल– 78141-42944**

आदि धर्म – मूल निवासियों की स्वतंत्रता, समानता, साझेदारी और स्वाभिमान के संघर्ष की एक गौरवशाली यात्रा

आदि धर्म भारत के आदिवासी (मूल निवासी) लोगों का धर्म है, जिन्हें अछूत कहकर जातिगत भेदभाव का शिकार बनाया जाता रहा है। भारतीय आदिवासी रहबरों के बेगमपुरा के संकल्प को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए सन् 1925 ई. में आदि धर्म मंडल की स्थापना पंजाब के दोआबा क्षेत्र के गाँव मुगोवाल, ज़िला होशियारपुर में ग़दरी बाबा बाबू मंगू राम मुगोवालिया के नेतृत्व में की गई। समूचे भारत के आदि धर्म मंडल के सदस्यों ने गहन विचार-विमर्श के बाद 11-12 जून 1926 को गाँव मुगोवाल, में एक विशाल सम्मेलन में मूल निवासियों के धर्म 'आदि धर्म' के पुनर्जागरण की घोषणा की और सिरों पर लाल (मजीठी) पगड़ियाँ सजाकर स्वाभिमान के संघर्ष में कूद पड़े। मूल निवासियों के इस स्वर्णिम इतिहास की स्मृति में आदि धर्म की पहली शताब्दी 11-12 जून 1925 से 11-12 जून 2026 तक मनाई जा रही है।

ग़दरी बाबा मंगू राम मुगोवालिया ने कभी स्वयं को संत या महात्मा नहीं कहा, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष के माध्यम से आदि धर्मियों के अधिकार प्राप्त करने का मार्ग चुना। सन् 1928 में उन्होंने साइमन कमीशन को स्पष्ट किया कि भारत के आदिवासी लोग हिंदू समाज का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि उनका अपना स्वतंत्र धर्म-आदि धर्म है। 1931 की जनगणना में आदि

धर्म को एक अलग धर्म के रूप में मान्यता मिलना एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी। इस में 4,18,779 लोगों ने स्वयं को आदि धर्मी रजिस्टर कराया। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 1932 की लंदन गोलमेज़ सम्मेलन में पूना पैक्ट में पृथक निर्वाचन क्षेत्रों के मुद्दे पर भी मुगोवालिया ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई। 1937 के पंजाब विधानसभा चुनावों में आदि धर्म मंडल ने सभी 8 आरक्षित सीटों में से 7 सीटें जीतकर इतिहास रच दिया। इस आंदोलन ने पंजाब को अंबेडकरवादी आंदोलन का केंद्र बना दिया। आदि धर्म की मर्यादा और सिद्धांतों में उनके प्रेरणा स्त्रोत और मार्गदर्शक के रूप में भगवान वाल्मीकि जी, गुरु नामदेव जी, गुरु रविदास जी और गुरु कबीर जी को माना गया है, जिन्होंने समानता, भाईचारे और मानव कल्याण के संदेश और सिद्धांत संसार को दिए। आदि धर्म का रंग मजीठी (लाल) है, पवित्र शब्द 'सोहं' है और अभिवादन 'जय गुरुदेव-धन्य गुरुदेव' है। आदि धर्मियों में मिलने के समय पहला व्यक्ति 'जय गुरुदेव' कहता है और दूसरा व्यक्ति 'धन्य गुरुदेव' कहकर गुरु साहिबान के प्रति सम्मान प्रकट करता है।

आदि धर्म की सौ वर्षों की यात्रा जहाँ एक स्वतंत्र और गौरवशाली धर्म की प्राप्ति है, वहीं यह मूल निवासियों में स्वाभिमान, समानता, स्वतंत्रता, मानव अधिकारों की रक्षा और बेगमपुरा जैसे न्यायपूर्ण समाज की स्थापना का स्वर्णिम इतिहास भी है। यह शताब्दी हमें न केवल अपने मार्गदर्शकों की वाणी और विचारधारा को जीवन में अपनाने का संदेश देता है, बल्कि आदि धर्म के मूल सिद्धांतों को अपने सामाजिक जीवन में लागू करने का अवसर भी प्रदान करता है।

चरणजीत सिंह बिनपालके

संस्था को सहयोग प्रदान करने हेतु विनम्र निवेदन

श्री गुरु रविदास जी के मिशन-प्रचार के लिए किए जाने वाले सभी कार्य संस्था के सदस्यों के वार्षिक चंदे, कौमी हितैषियों तथा गुरु-मिशन प्रेमियों के सहयोग से ही सफल हो पाते हैं। संस्था की ओर से गुरु साहिबानों के मिशन-प्रचार के अनेक महत्वपूर्ण कार्य अभी अधूरे पड़े हैं। अत: आप सभी से विनम्र निवेदन है कि संस्था को अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग दें, ताकि श्री गुरु रविदास जी के मिशन को जन-जन तक पहुँचाया जा सके। आप संस्था की सेवा हेतु चैक , बैंक ड्राफ्ट या सीधे संस्था के बैंक खाते में **Google Pay, paytm, PhonePe** द्वारा राशि खाते में **Transfer** या जमा करवा सकते हैं। संस्था के बैंक खाते का विवरण:-

SRI GURU RAVIDASS MISSION
PARCHAR SANSTHA PUNJAB (Regd.)
V.P.O. BINPALKE, VIA. BHOGPUR,
DISTT. JALANDHAR
ACCOUNT NO. 32717505525
IFS Code No. SBIN0010122
STATE BANK OF INDIA (BHOGPUR)

बेशक आप छोटी से छोटी राशि भेजे, सहयोग अवश्य करें।

क्षमा याचना

श्री गुरु रविदास जी की अगम, अद्वितीय, उच्च व शुद्ध अमृतमयी बाणी अत्यंत महान है। यह विश्वव्यापी पावन बाणी सम्पूर्ण मानवता को एक ही सार्वभौमिक परमात्मा से जोड़ती है। यह सम्पूर्ण संसार में एकता, समानता, स्वतंत्रता, भाईचारे व सांझीवालता की स्थापना के दर्शन का अनमोल खज़ाना है।

ऐसी दिव्य बाणी की व्याख्या करते समय अनेक भूल-त्रुटियाँ रह गई होंगी। श्री गुरु रविदास जी महाराज और सभी साध-संगत क्षमाशील हैं - कृपया हुई भूलों को क्षमा करें।

बाणी और व्याख्या को साथ-साथ देने के कारण इसे संक्षेप में रखा गया है। आप सभी से निवेदन है कि अपने कीमती सुझाव और प्रकाशन में सुधार के लिए हमें लिखकर भेजें, जिससे गुरु रविदास जी की बाणी और विचारधारा के प्रचार को और भी श्रेष्ठ बनाया जा सके।

गुरु पंथ का दास
चरणजीत सिंह बिनपालके

गुरु साहिबानों की बाणी, व्याख्या, विचारधारा, जीवन और इतिहास पंजाबी, हिंदी व अंग्रेज़ी में पढ़ने हेतु - visit us www.begumpuramission.com
गुटका साहिब की PDF भी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

शब्द - 1

सिरी रागु बाणी श्री रविदास जी की
१ॐ सतिगुर प्रसादि॥

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥१॥

हे प्रभ! तुझ में व मुझ में और मुझ में व तुझ में क्या अंतर है? अंतर तो उतना ही है, जितना सोने और सोने से बने कड़े में, या पानी और पानी पर उठने वाली तरंग में है॥१॥

जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता॥१॥ रहाउ॥

हे प्रभ! यदि हम पाप न करते, तो फिर पापियों को पवित्र करने वाले आपके नाम की महिमा कैसे प्रकट होती?॥१॥

तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी॥२॥

आप सबके मन की बातें जानते हैं। आप ही मार्ग दिखाने वाले और ब्रह्मज्ञान के स्रोत हैं। जब कोई साधक ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो वही प्रभ-स्वरूप हो जाता है। प्रभ से साधक और साधक से प्रभ की पहचान हो जाती है।। २ ॥

सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३ ॥

(अंग-९३)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं – हे प्रभ! मुझे ऐसा ज्ञान दें कि मेरा तन-मन सदा आपका ही स्मरण करे। और कोई मुझे यह भी समझाएं कि आप सर्वव्यापक हैं, हर जगह विद्यमान हैं ॥३ ॥

शब्द - 2

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी
१ॐ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१ ॥

मैं दिन-रात इसी चिंता में रहता हूँ कि बुरे विकारों की संगत के कारण मेरे कर्म बुरे हो गए हैं, और इसी वजह से मेरा सम्पूर्ण जीवन भी बुरा हो गया है ॥१ ॥

राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे जगत के मालिक! हे मेरे जीवन के सहारे प्रभ! मुझे अपने से दूर मत करना–मैं आपका सेवक हूँ॥ रहाउ॥

मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥
चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२ ॥

मेरे पाप और विकारों की विपत्ति दूर कर, मुझे श्रेष्ठ बनाइए। मैं आपके चरण कभी नहीं छोड़ूँगा, चाहे मेरा शरीर नष्ट ही क्यों न हो जाए ॥२ ॥

कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३ ॥१ ॥

(अंग-३४५)

गुरु रविदास जी निवेदन करते हैं – हे प्रभ! मैं आपकी शरण में हूँ; आपके दर्शन के लिए व्याकुल हूँ। मुझे शीघ्र दर्शन दीजिए ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 3

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

१ॐ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि॥

बेगम पुरा सहर को नाउ॥

दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥

वह विश्व राज्य (शहर) जहाँ किसी को दु:ख, चिंता, भय या घबराहट नहीं होती। सब आनंद और सुख से जीवन बिताते हैं। उसका नाम बेग़मपुरा है।

नां तसवीस खिराजु न मालु॥

खउफु न खता न तरसु जवालु॥१॥

वहाँ किसी को कोई कर, डर, पीड़ा या कमी नहीं होती॥१॥

अब मोहि खूब वतन गह पाई॥

ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥१॥ रहाउ॥

अब मैंने रहने के लिए एक सुंदर स्थान ढूँढ लिया है, जहाँ हमेशा केवल सुख ही सुख हैं॥१॥ रहाउ॥

काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥

दोम न सेम एक सो आही॥

वहाँ सतत् शासकीय व्यवस्था हमेशा कायम रहती है। इस देश के शहरी किसी भी भेदभाव से मुक्त हैं। न दूसरा, न तीसरा दर्जा है, सभी समान हैं।

आबादानु सदा मसहूर॥

ऊहां गनी बसहि मामूर॥२॥

यह स्थान हमेशा प्रसिद्ध है और वहाँ केवल पवित्र आत्मा वाले लोग निवास करते हैं॥२॥

तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥

महरम महल न को अटकावै॥

बेग़मपुरा शहर में जैसे कोई चाहे घूम-फिर सकता है, प्रभ के महलों की पूर्ण भेदी भी उन्हें रोक नहीं सकते। अर्थात् प्रजा, राजा के हर भेद से परिचित है।

कहि रविदास खलास चमारा॥

जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥३॥२॥

(अंग-३४५)

इस देश के निवासी तथा स्वतंत्र हुए गुरु रविदास चमार फरमाते हैं कि जो भी इस शहर का निवासी है, वह मेरा मित्र है॥३॥२॥

शब्द - 4

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥

घट अवघट डूगर घणा

इकु निरगुणु बैलु हमार ॥

ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् गुरु रविदास प्रभ से संबोधित होते हैं – हे प्रभ! जहाँ से मुझे अपने ज्ञान के भंडार का कारवाँ लेकर गुजरना है, वह मार्ग बहुत कठिन, खतरनाक और पहाड़ी है। पर मेरा बैल रूपी मन निर्बल है।

रमईए सिउ एक बेनती

मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१ ॥

इसलिए हे प्रभ! तेरे सामने मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस ज्ञान रूपी भंडार की रक्षा करें ॥1 ॥

को बनजारो राम को

मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१ ॥ रहाउ ॥

क्या कोई प्रभ के नाम का व्यापारी है? प्रभ के

नाम के ज्ञान रूपी धन से भरी हुई मेरी गाड़ी चली जा रही है ॥१ ॥ रहाउ ।।

हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥

मै राम नाम धनु लादिआ

बिखु लादी संसारि ॥२ ॥

गुरु जी स्पष्ट करते हैं कि मैं ही प्रभ के नाम का व्यापारी हूँ और केवल ब्रह्मज्ञान का ही व्यापार करता हूँ। गुरु जी डंके की चोट (सुस्पष्ट घोषणा) से कहते हैं कि केवल मैं ही ब्रह्मज्ञान व्यापारी हूँ, बाकी पूरी दुनिया जहर का व्यापार कर रही है।२ ।।

उरवार पार के दानीआ

लिखि लेहु आल पतालु ॥

हे चित्रगुप्त! मेरे बारे में अगर कोई मनमानी बातें भी लिखना चाहते हैं तो लिख दें।

मोहि जम डंडु न लागई

तजीले सरब जंजाल ॥३ ॥

फिर भी मुझे (यमदूतों) की फांसी नहीं लगेगी। क्योंकि मैंने सारे जंजाल त्याग दिए हैं भाव मैं सत्य

पर अडिग खड़ा हूं और किसी भी दंड से भयभीत नहीं हूँ॥३॥

जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का
कहु रविदास चमार॥४॥१॥ (अंग-३४५)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि संसार का रंग कच्चे कुसंभे के रंग जैसा अस्थिर है, परन्तु मेरे प्रभ का रंग मजीठ जैसा पक्का है, अर्थात् यह रंग सदा स्थायी और अटल है॥४॥१॥

शब्द - 5

गउड़ी पूरबी रविदास जीउ

१ॐ सतिगुर प्रसादि॥

कूपु भरिओ जैसे दादिरा
कछु देसु बिदेसु न बूझ॥

हे प्रभ! मैं उस कुएँ के मेंढको जैसा हूँ, जिन्हें कुएँ के बाहर का कोई ज्ञान नहीं होता।

ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ

कछु आरा पारु न सूझ॥१॥

इस प्रकार मेरा मन विकारों में फंसा हुआ है, इसलिए हे प्रभ! मुझे आपके बारे में ज्ञान नहीं है॥१॥

सगल भवन के नाइका
इकु छिनु दरसु दिखाइ जी॥१॥रहाउ॥

हे सर्व संसार का नेतृत्व करने वाले प्रभ! मुझे एक पल के लिए दर्शन दें॥१॥रहाउ॥

मलिन भई मति माधवा
तेरी गति लखी न जाइ॥

हे प्रभ विकारों के कारण मुझे आपकी महानता का ज्ञान नहीं है।

करहु क्रिपा भ्रमु चूकई
मै सुमति देहु समझाइ॥२॥

कृपा करें कि मुझे आपकी समझ और विवेक प्राप्त हो, और मेरा भ्रम दूर हो जाए॥२॥

जोगीसर पावहि नही
तुअ गुण कथनु अपार॥
प्रेम भगति कै कारणै

कहु रविदास चमार ॥३ ॥१ ॥ (अंग-३४६)

हे प्रभ! आपके गुण अनंत हैं। तेरे गुणों को योगी तो क्या उनके गुरु भी नहीं जान पाए। मैं (गुरु) रविदास चमार आपकी प्रेम-भक्ति प्राप्त करने के लिए आपके गुण गाता हूँ। ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 6

गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

सतिजुगि सतु तेता जगी

दुआपरि पूजाचार ॥

इस पावन शब्द के पहले बोध में गुरु जी हिंदू धर्म की पूजा विधि का वर्णन करते फरमाते हैं कि - सतयुग की पूजा विधि थी, दान देना, त्रेतायुग की पूजा विधि यज्ञ करना, द्वापरयुग में देवताओं की पूजा का विधान था।

तीनौ जुग तीनौ दिड़े

कलि केवल नाम अधार ॥१ ॥

ब्राह्मणों ने तीनों युगों में तीन पूजा विधियाँ परिपक्व कर दीं और कलियुग में अवतारों की पूजा - अर्थात् श्री रामचंद्र और श्री कृष्ण की मूर्तियों की पूजा - को दृढ़ किया गया है ॥१ ॥

पारु कैसे पाइबो रे ॥

मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥

जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१ ॥ रहाउ ॥

परंतु, इस पूजा विधि के द्वारा भवसागर से पार हुआ ही नहीं जा सकता। मुझे कोई स्पष्ट रूप से नहीं समझा रहा कि आवागमन (जन्म-मृत्यु के चक्र) से मुक्ति कैसे मिले? क्योंकि उपरोक्त चार युगों की पूजा विधियों के माध्यम से मनुष्य को प्रभ की प्राप्ति नहीं हो सकती ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

बहु बिधि धरम निरुपीए

करता दीसै सभ लोइ ॥

कवन करम ते छूटीऐ

जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२ ॥

शास्त्रों के अनुसार, बहुत सी धार्मिक विधियाँ

करती दुनिया नज़र आ रही है परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि कौन सा कर्म किया जाए, जिससे मुक्ति प्राप्त हो ॥२ ॥

करम अकरम बीचारीऐ
संका सुनि बेद पुरान ॥

वेद और पुराण कुछ कर्म करने की आज्ञा देते हैं और कुछ कर्मों की मनाही करते हैं। इस प्रकार वेद और पुराण पढ़ने से मन में संदेह उत्पन्न होते हैं।

संसा सद हिरदै बसै
कउनु हिरै अभिमानु ॥३ ॥

इन निर्देशों के कारण मन में भ्रम तथा विकार और अधिक गहरे हो जाते हैं। इस प्रकार मन में सदैव के लिए स्थिर हुए भ्रमों, विकारों से उत्पन्न हुए अहंकार को कैसे दूर किया जाए? ॥३ ॥

बाहरु उदकि पखारीऐ
घट भीतरि बिबिधि बिकार।

तीर्थ स्नान (धार्मिक स्थानों पर स्नान) से बाहरी अशुद्धि तो दूर हो सकती है, परंतु भीतर के विकार

(मन और चित्त के दोष) टिके रहते हैं।

सुध कवन पर होइबो
सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४ ॥

यह शुद्ध होना तो हाथी के स्नान जैसा है, जो स्नान करने के बाद अपने ऊपर मिट्टी फेंक लेता है। जैसे मनुष्य तीर्थों पर स्नान करने के बाद तुरंत फिर से विकारी कार्यों में लग जाता है ॥४ ॥

रवि प्रगास रजनी जथा
गति जानत सभ संसार ॥

जैसे समस्त संसार जानता है कि सूरज की रोशनी से रात का अंधेरा दूर हो जाता है।

पारस मानो ताबो छुए
कनक होत नही बार ॥५ ॥

और पारस (पारस पत्थर) को ताँबे के साथ छूते ही तांबे को सोना बनने में विलम्भ नहीं होता ॥५ ॥

परम परस गुरु भेटीऐ
पूरब लिखत लिलाट ॥

इस प्रकार, अच्छे भाग्यो से अर्थात् जन्म लेने के

बाद किए गए अच्छे कर्मों के फलस्वरूप जब पारसों का पारस गुरु मिल जाए।

उनमन मन मन ही मिले
छुटकत बजर कपाट ॥६ ॥

और जब उसका साक्षात्कार साधक के मन के साथ हो जाता है, तो मन के कपाट खुल जाते हैं ॥६ ॥

भगति जुगति मति सति करी
भ्रम बंधन काटि बिकार ॥

ब्रह्म गुरु के ब्रह्म ज्ञान (जुड़ित युक्ति) को भक्ति के साथ दृढ़ कर देने से वेदों, पुराणों की भ्रांतियाँ, शास्त्रों के बंधन और विकार नष्ट हो जाते हैं।

सोई बसि रसि मन मिले
गुन निरगुन एक बिचार ॥७ ॥

अब प्रभ का अमृत रस मन में वास कर गया है, और अब केवल एक ब्रह्म का ज्ञान ही मन में है ॥७ ॥

अनिक जतन निग्रह कीए
टारी न टरै भ्रम फास ॥

शास्त्रों के अनुसार हठ योग करके अनेकों प्रयास

किए गए, लेकिन मन विकारों से मुक्त नहीं हो सका।

प्रेम भगति नही ऊपजै
ता ते रविदास उदास ॥८ ॥१ ॥ (अंग-३४६)

इस प्रयासों से न ही प्रभ प्रेम की उत्पत्ति हुई (क्योंकि सारा संसार यही कर्मकांड कर रहा है।) इस कारण मैं उदास हूँ (परन्तु परब्रह्म गुरु के ब्रह्म ज्ञान के द्वारा मैंने प्रभु को प्राप्त कर लिया है) ॥८ ॥१ ॥

शब्द - 7

''ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभओ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि।।
रागु आसा बाणी भगता की
कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ।।''
(अंग - ४७५)

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की
ੴ सतिगुर प्रसादि।।

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग
कुंचर एक दोख बिनास ॥

हिरण को नाद के संगीत का, मछली को पानी, भौंरे को सुगंध, पतंगे को रौशनी और हाथी को काम का विकार है। ये सभी एक-एक प्रकार के विकार (दोष) होने के कारण नष्ट हो जाते हैं।

पंच दोख असाध जा महि
ता की केतक आस ॥१ ॥

परंतु मनुष्य तो पांचों ही इलाज रहत विकारों, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार-में फंसा रहता है, उस के बचने की कितनी आशा हो सकती है ॥१ ॥

माधो अबिदिआ हित कीन ॥
बिबेक दीप मलीन ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे प्रभ! मनुष्य ने अज्ञानता से प्रीति लगाई हुई है। इस कारण उसकी बुद्धि का दीपक धुंधला हो गया है ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

त्रिगद जोनि अचेत संभव
पुंन पाप असोच ॥

टेढ़ी योनियों पशु, जानवर, पक्षी, कीड़े आदि विचारहीन होने के कारण पुण्य-पाप की समझ नहीं रखते।

मानुखा अवतार दुलभ
तिही संगति पोच ॥२ ॥

परंतु मनुष्य का जीवन बहुत दुर्लभ है, पर इसकी संगति बुरे विकारों के साथ है ॥२ ॥

जीअ जंत जहा जहा लगु
करम के बसि जाइ ॥

ऐसे जीव-जंतु कर्मों के अनुसार आत्मिक मृत्यु को प्राप्त होते हैं, जिसे कोई रोक नहीं सकता।

काल फास अबध लागे
कछु न चलै उपाइ ॥३ ॥

कर्मों के अनुसार ही वे अन्य योनियों में प्रवेश करते हैं ॥३ ॥

रविदास दास उदास तजु भ्रमु
तपन तपु गुर गिआन ॥

हे प्रभ! मैं तेरा दास (गुरु) रविदास, विकारों से ऊपर उठकर, तेरे उत्तम स्मरण की प्राप्ति के लिए तत्पर हूँ।

भगत जन भै हरन

परमानंद करहु निदान ॥४ ॥१ ॥(अंग-४८६)

आप अपने भक्तों के भय को दूर करते हैं, मुझे भी इस से दूर करके परम आनंद प्रदान करें ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 8

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

संत तुझी तनु संगति प्रान ॥

सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१ ॥

हे प्रभ! संतों ने आपके ब्रह्म ज्ञान को समझ लिया है वह जान गये हैं कि संत आपका तन हैं और संतों की संगत में आप (प्रभ) की जिन्द जान हैं ॥१ ॥

संत ची संगति संत कथा रसु ॥

संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे प्रभ मुझे ऐसे संतों की संगति, प्रवचन का आनंद और संतों का प्रेम प्रदान करें ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

संत आचरण संत चो मारगु

संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ २ ॥

मुझे संतों का सदाचार, सच्चा मार्ग व संतों की जूठन

साफ़ करने की सेवा भाव अति नम्रता प्रदान करो ।।२ ।।

अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥

जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३ ॥

एक और दात मांगता हूँ। मुझे भक्ति रूपी मणि दें और मुझे कभी भी पापियों के दर्शन न कराएँ ॥३ ॥

रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥

संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४ ॥२ ॥

(अंग-४८६)

गुरु रविदास जी प्रवचन करते हैं कि वही ज्ञानी है, जो जानता है कि संत और प्रभ में कोई अंतर नहीं है ॥४ ॥२ ॥

शब्द - 9

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

तुम चंदन हम इरंड बापुरे

संगि तुमारे बासा ॥

हे प्रभ! आप गुणों से भरे चंदन हैं और हम नम्र अरिंड़ हैं।

नीच रूख ते ऊच भए है
गंध सुगंध निवासा ॥१ ॥

हमारा वास आपके साथ है, आपके साथ रहकर हम निकृष्ट से उत्तम हो गए हैं, अर्थात् हमारे भीतर आपके अच्छे गुण आ गए हैं ॥१ ॥

माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे प्रभ! मुझे अपनी संगति की टेक प्रदान करें, हम दोषों से भरे हैं और आप कृपालु हैं ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

तुम मखतूल सुपेद सपीअल
हम बपुरे जस कीरा ॥

आप दूध जैसे श्वेत रेशम हैं और हम काले पत्थर (निमाने) हैं।

सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ
जैसे मधुप मखीरा ॥२ ॥

हम पर कृपा करें, मैं आपकी संगति में मधुमक्खियों की तरह मिलजुल कर, और संत सिपाही बनकर रहूँ ॥२ ॥

जाती ओछा पाती ओछा

ओछा जनमु हमारा ॥

हे प्रभ! माया के दूतों पाँच विकारों के कारण मेरी जाति, कुल और जन्म नीच (अवनत) हो गया है।

राजा राम की सेव न कीन्ही
कहि रविदास चमारा ॥३ ॥३ ॥ (अंग-४८६)

हे प्रभ! मैं (गुरु) रविदास चमार आपकी शरण में आकर आपकी भक्ति और सेवा नहीं कर पाया। (इसलिए हे प्रभ! मुझे अपनी सत्संगत की दात (बख्शिश), भक्ति और सेवा करने की शक्ति दें, ताकि मेरी जाति, कुल और जीवन ऊँचा हो जाए) ॥३ ॥३ ॥

शब्द - 10

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१ ॥

हे प्रभ! मुझे कोई चिंता नहीं, भले ही मेरा शरीर टूट-फूट जाए, पर चिंता यह है कि कहीं मेरे मन से आपका प्रेम दूर न हो जाए ॥१ ॥

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
पान करत पाइओ
पाइओ रामईआ धनु ॥१ ॥ रहाउ ॥

मैंने आपके कमल रूपी चरणों-भवनों में अमृत रस पीते हुए, राम नाम रूपी धन को पा लिया है ॥१ ॥ (रहाउ)

संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२ ॥

हे प्रभ! आपके नाम के कारण मैं आपका दास संसार के बंधनों, जैसे भोग-विलास, मुश्किलों का डर, धन और माया के दोषों में लिप्त नहीं होता ॥२ ॥

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३ ॥४ ॥

(अंग-४८६)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभ! मैंने स्वयं को आपके प्रेम की डोर से बाँध लिया है, अब मैं इससे मुक्त नहीं होऊँगा ॥३ ॥४ ॥

शब्द - 11

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१ ॥ रहाउ ॥

जिन्होंने हरि (प्रभ) का हर सांस में स्मरण किया, वे भवसागर को पार कर गए अर्थात् मोह माया के बंधनों से मुक्त हो गए ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

हरि के नाम कबीर उजागर ॥
जनम जनम के काटे कागर ॥१ ॥

हरि का स्मरण करके (सत्गुरु) कबीर जी प्रसिद्ध हुए और जन्मों-जन्मों का लेखा समाप्त हो गया; प्रभु का मिलाप हुआ ॥१ ॥

निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२ ॥

(सत्गुरु) नामदेव जी ने प्रेमपूर्वक हरि (प्रभ) का नाम जपा और हरि को दूध पिलाया। वे जन्मों के संकट में नहीं आए ॥२ ॥

जन रविदास राम रंगि राता ॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३ ॥५ ॥
(अंग-४८७)

इस प्रकार हरि का सेवक (गुरु) रविदास एक प्रभ के रंग में रंग गया और एक हरि को प्राप्त किया। अब ब्रह्म गुरु की कृपा से नरकों, अर्थात्, विकारों, कष्टों और दुखों से मुक्त है ॥३ ॥५ ॥

शब्द - 12

आसा बाणी श्री रविदास जीउ की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै
दउरिओ फिरतु है ॥१ ॥ रहाउ ॥

मिट्टी का मूर्त मानव माया में लिप्त होकर हास्यास्पद नृत्य कर रहा है। मनुष्य को केवल चारों ओर माया देखना, माया की बातें सुनना ही अच्छा लगता है और उसके लिए भटकता फिरता है ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१ ॥

जब धन-सम्पत्ति प्राप्त हो जाती है तो वह अहंकारी बन जाता है। परंतु धन सम्पत्ति के जाने पर वह रोने लगता है अर्थात् दुखी होता है ॥१ ॥

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२ ॥

मनुष्य मन, वचन और कर्मों से इच्छाओं का लालची बन गया है पर जब मृत्यु आ गई तो उसे पता नहीं कि कहाँ ठिकाना मिलेगा ॥२ ॥

कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥ ३ ॥६ ॥
(अंग-४८७)

गुरु रविदास जी दृढ़ता से कहते हैं कि संसार एक बाज़ी (खेल) है और मेरी उस बाज़ीगर (खेल चलाने वाले प्रभ) से प्रीति हो गई है, और मैं इस हासोहीने (हास्यास्पद) नाच और चारों ओर भटकने से बच गया हूँ ॥३ ॥६ ॥

शब्द - 13

गूजरी श्री रविदास जी के पदे घरु ३

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥

फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥१॥

गुरु जी ने मानवता को समझाया है कि संसार की वस्तुओं से प्रभ की पूजा करना व्यर्थ है, क्योंकि वे वस्तुएँ प्रभ को अर्पित करने योग्य नहीं हैं, और न ही प्रभ इनकी माँग करता है। दूध को बछड़े ने, फूल को भवरि ने और पानी को मछली ने जूठा (अशुद्ध) कर दिया है॥१॥

माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥

अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥१॥ रहाउ॥

इसलिए हे माँ! मैं प्रभ की पूजा किस चीज़ से करूँ–और कोई सच्चे फूल आदि तो यहाँ नहीं हैं॥१॥ रहाउ॥

मैलागर बेर्हे है भुइअंगा॥

बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा॥२॥

चंदन के वृक्षों में साँप लिपटे हुए हैं, इसलिए वे जूठे हैं। पानी में ज़हर (हाइड्रोजन) और अमृत (ऑक्सीजन) एक साथ होने के कारण आपकी पूजा के योग्य नहीं हैं॥२॥

धूप दीप नईबेदहि बासा॥

कैसे पूज करहि तेरी दासा॥३॥

धूप-बत्ती, दीये और प्रसाद को अर्पण करने से पहले ही मनुष्य स्वयं सुगंध लेकर अपवित्र कर देता है। इस कारण हे प्रभ, आपका दास आपकी पूजा कैसे करे?॥३॥

तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥

गुर परसादि निरंजनु पावउ॥४॥

इसलिए मैं अपना तन और मन प्रभ की पूजा के लिए अर्पित करता हूँ, और गुरु की कृपा से जब यह अर्पण प्रभ को स्वीकार हो गया है, तब मैं प्रभ को प्राप्त कर सकूंगा॥४॥

पूजा अरचा आहि न तोरी॥

कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५ ॥२ ॥

(अंग-५२५)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभ ! यदि आपकी पूजा के लिए ये पदार्थ (दूध, फूल, पानी, चंदन, सुगंध आदि) आवश्यक होते और मुझे ये पवित्र पदार्थ न मिलने के कारण मुझ से तेरी पूजा हो ही नहीं पाती। इस स्थिति में मेरा क्या हाल होता? ॥५ ॥२ ॥

शब्द - 14

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

जब हम होते तब तू नाही

अब तूही मै नाही ॥

हे प्रभ ! जब मेरे भीतर अहंकार था, तब आप नहीं थे। अब अहंकार समाप्त हो गया है और मेरे भीतर केवल आप ही आप हैं।

अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि

जल केवल जल मांही ॥१ ॥

ठीक वैसे ही जैसे समुद्र से उठने वाली लहरें समुद्र में ही समा जाती हैं ॥१ ॥

माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥

जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे माधव ! हम जो संसार के बारे में सोचते हैं, वास्तव में वह वैसा नहीं है। यह हमारी भ्रांति ही है ॥१ ॥ (रहाउ) ।।

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ

सुपने भइआ भिखारी ॥

एक राजा अपने सिंहासन पर बैठा सो गया और उसे सपना आया कि वह भिखारी बन गया है।

अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ

सो गति भई हमारी ॥ २ ॥

भ्रम के कारण, जैसे राजा अपने राज्य के होने के बावजूद भी सपने में राज से वंचित होकर दु:ख भोगता है, हे प्रभ, उसी प्रकार तुम से बिछड़ कर हमारी यही दशा हो रही है ॥२ ॥

राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि

अब कछु मरमु जनाइआ ॥

यह वैसा ही है, जैसे रात में रस्सी को साँप समझ लेने की भ्रांति। पर अब इसकी सच्चाई समझ में आ गई है।

अनिक कटक जैसे भूलि परे
अब कहते कहनु न आइआ ॥३ ॥

जैसे सोने से बने कड़े सोने से अलग नहीं होते, उसी तरह यह बात अब कहने-सुनने योग्य नहीं रह गई है ॥३ ॥

सरबे एकु अनेकै सुआमी
सभ घट भोगवै सोई ॥

जीव और परमात्मा के बीच पड़े भ्रांतियों से मुक्त होकर, प्रभ की प्राप्ति के पश्चात् गुरु रविदास जी दृढ़ होकर यह स्पष्ट करते हैं कि प्रभ एक है और वह अनेक रूप धारण करके हर जीव में आत्मिक और भौतिक आनंद भोग रहा है।

कहि रविदास हाथ पै नेरै
सहजे होइ सु होई ॥४ ॥१ ॥ (अंग-६५७)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि प्रभ तो हमारे हाथ से भी निकट है और उसकी इच्छा के अनुसार सब कुछ होता रहता है ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 15

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जउ हम बांधे मोह फास
हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥

हे प्रभ! जब मैं मोह के विकारों में फँसा हुआ था, तब मैंने तेरी आराधना करके उन पर विजय पाई। अब मैंने तुझे अपने प्रेम के बंधन में बाँध लिया है।

अपने छूटन को जतनु करहु
हम छूटे तुम आराधे ॥१ ॥

गुरु जी प्रभ को चुनौती देते हुए फरमाते हैं कि हे प्रभ! अब तुम हमारे प्रेम के बंधन से छूटने की कोई कोशिश कर लो ॥१ ॥

माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥
अब कहा करहुगे ऐसी ॥१ ॥ रहाउ ॥

तुम स्वयं और मेरे प्रेम को भली-भांति जान चुके हो। अब तुम इस से मुक्त होने के लिए क्या करोगे? ॥१ ॥ रहाउ ॥

मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ
रांधि कीओ बहु बानी ॥१ ॥

हे प्रभ! जैसे मछली खाने वाला मछली को पकड़कर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटता है और कई तरीकों से पकाता है ॥१ ॥

खंड खंड करि भोजनु कीनो
तऊ न बिसरिओ पानी ॥२ ॥

मछली खाने वाला उसे चबा-चबाकर खा जाता है, पर फिर भी मछली अपने मूल पानी को नहीं भूलती, क्योंकि मछली खाने वाले को और अधिक प्यास लग गई ॥२ ॥

आपन बापै नाही किसी को
भावन को हरि राजा ॥

वह प्रभ किसी की निजी संपत्ति नहीं है, वह तो सबका है और प्रेम से बंधा हुआ है।

मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ
भगत नही संतापा ॥३ ॥

इस प्रेम को भूलकर सारा संसार मोह की जाल में फँसा हुआ है, पर तेरा सेवक इस पीड़ा से मुक्त है ॥३ ॥

कहि रविदास भगति इक बाढी
अब इह का सिउ कहीऐ ॥

गुरु रविदास जी प्रभ को उलाहना देते हुए प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभ! मेरा तुझसे प्रेम इतना बढ़ गया है कि मुझे अपना दुख किसी और को बताने की आवश्यकता नहीं है।

जा कारनि हम तुम आराधे
सो दुखु अजहू सहीऐ ॥४ ॥२ ॥ (अंग-६५८)

परंतु तेरी प्राप्ति के बावजूद मैं अपने समाज की दुर्दशा का दुख सह रहा हूँ ॥४ ॥२ ॥

शब्द - 16

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ

बिरथा जात अबिबेकै ॥

मनुष्य रूपी दुर्लभ जन्म अच्छे कर्मों के फलस्वरूप मिला है, परंतु अज्ञानता के कारण यह व्यर्थ जा रहा है।

राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन

बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१ ॥

हमने इंद्र राजा की तरह महल बना लिए, पर प्रभ भक्ति के बिना यह किसी काम के नहीं है ॥१ ॥

न वीचारिओ राजा राम को रसु ॥

जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥१ ॥ रहाउ ॥

हमने प्रभ-भक्ति (राजा राम) के रस का आनंद कभी नहीं समझा, जिसकी प्राप्ति से सांसारिक रस भुला दिए जाते हैं ॥१ ॥ रहाउ ॥

जानि अजान भए हम बावर

सोच असोच दिवस जाही ।

हम जानते हुए भी अनजाने और मूर्ख बन गए हैं, और अच्छे-बुरे विचारों में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं।

इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि

परमारथ परवेस नही ॥२ ॥

हमारी इन्द्रियाँ विकारों के प्रति शक्तिशाली हो रही हैं। बुद्धि कमज़ोर हो रही है। परिणामस्वरूप, हृदय में अच्छे विचार प्रवेश नहीं कर रहे हैं ॥२ ॥

कहीअत आन अचरीअत अन कछु

समझ न परै अपर माइआ ॥

हम कहते कुछ हैं और करते कुछ और हैं, तथा हम शक्तिशाली माया को समझने में असमर्थ हैं।

कहि रविदास उदास दास मति

परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३ ॥३ ॥

(अंग-६५८)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभ! मेरी समझ

माया से उपराम है (त्याग) है। मुझे अपने क्रोध से मुक्त करके मेरे ऊपर कृपा करें ॥३ ॥३ ॥

शब्द - 17

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की॥

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि
कामधेनु बसि जा के ॥

हे पंडित! तुम उस प्रभ का स्मरण क्यों नहीं करता, जिस सुखों के सागर प्रभ के वश में स्वर्ग के पाँच वृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु मौजूद हैं।

चारि पदारथ असट दसा सिधि
नव निधि कर तल ता के ॥१ ॥

उस प्रभ की हथेली पर ही चार पदार्थ, अठारह सिद्धियाँ और नौ ख़ज़ाने (नव निधियाँ) हैं ॥१ ॥

हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१ ॥ रहाउ ॥

इसलिए तुम अन्य रचे हुए ग्रंथों को छोड़कर

केवल प्रभ का ही स्मरण करो ॥१ ॥ रहाउ ॥

नाना खिआन पुरान बेद बिधि
चउतीस अखर मांही ॥

हे पंडित! पुराणों, वेदों आदि की कथाएँ और उनकी विधियाँ–देवनागरी के चौंतीस अक्षरों से रचा साहित्य–सिर्फ वाक्य–रचना मात्र हैं।

बिआस बिचारि कहिओ परमारथु
राम नाम सरि नाही ॥२ ॥

वेदों की खोज करने वाले वेदव्यास जी ने विचार कर निष्कर्ष निकाला है कि यह प्रभ–स्मरण के बराबर भी नहीं है ॥२ ॥

सहज समाधि उपाधि रहत फुनि
बडै भागि लिव लागी ॥

वे बड़े भाग्यशाली हैं, जिनकी चेतना विकार–रहित होकर, आत्मिक स्थिरता में टिककर प्रभ–स्मरण में लगी हुई है।

कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि
जनम मरन भै भागी ॥३ ॥४ ॥ (अंग–६५८)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि उनके मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है और वे जन्म-मरण के भय से मुक्त हो गए हैं ॥३ ॥४ ॥

शब्द - 18

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥

जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१ ॥

हे प्रभ ! यदि आप हरे-भरे पर्वत हैं, तो मैं आपकी उस हरियाली की सुंदरता देखकर नृत्य करने वाला मोर हूँ। यदि आप चन्द्रमा हैं, तो मैं आपके शीतल व प्रेममय प्रकाश का चकोर हूँ ॥१ ॥

माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥

तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१ ॥ रहाउ ॥

इसलिए हे प्रभ ! मुझसे अपना प्रेम मत तोड़ना। मैं तो आपसे अलग हो ही नहीं सकता। आपसे अलग होकर मैं किससे प्रीत जोड़ूँगा? ॥१ ॥ रहाउ ॥

जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥

जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२ ॥

यदि आप प्रकाश फैलाने वाला दीपक हैं, तो मैं उसकी बाती हूँ। यदि आप तीर्थ हैं, तो मैं उसका तीर्थयात्री हूँ ॥२ ॥

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥

तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३ ॥

मैंने आपसे गहरा प्रेम बाँध लिया है और अन्य सभी भ्रमों, विकारों आदि से अलग हो गया हूँ ॥३ ॥

जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥

तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४ ॥

जहाँ भी मैं जाऊँगा, मैं केवल आपकी स्तुति और प्रशंसा करूँगा, क्योंकि इस दुनिया में आपके जैसा कोई भगवान (ठाकुर) देवता और नहीं है ॥४ ॥

तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥

भगति हेत गावै रविदासा ॥५ ॥५ ॥

(अंग-६५८)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि आपकी भक्ति

करने से जन्मों के बंधनों से मुक्ति मिलती है। इसलिए मैं आपकी स्तुति और प्रशंसा में लीन हूँ।॥५॥५॥

शब्द - 19

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

जल की भीति पवन का थंभा
रकत बुंद का गारा॥
हाड मास नांड़ी को पिंजरु
पंखी बसै बिचारा॥१॥

मनुष्य का शरीर जल की दीवार, वायु का स्तम्भ, माता के रक्त, पिता के वीर्य का गारा, मांस और नसों का पिंजर है। इसमें आत्मा रूपी पक्षी वास कर रहा है॥१॥

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा॥१॥रहाउ॥

हे प्राणी! संसार में तेरा और मेरा कुछ भी नहीं है। मनुष्य तो वृक्ष पर आए एक पक्षी के भांति है, जो दिन

उद्य होते ही उड़ जाता है॥१॥रहाउ॥

राखहु कंध उसारहु नीवां॥
साढे तीनि हाथ तेरी सीवां॥२॥

हे भाई! तुम गहरी नींव रखकर मजबूत महल बनाते हो, तुम्हारे सोने के लिए केवल अढाई हाथ जगह ही पर्याप्त है॥२॥

बंके बाल पाग सिरि डेरी॥
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥३॥

हे जीव! तुम बालों को सुंदर बनाते हो, और सिर पर टेढ़ी पगड़ी पहनते हो, पर यह शरीर तो मिट्टी की ढेरी हो जाना है॥३॥

ऊचे मंदर सुंदर नारी॥
राम नाम बिनु बाजी हारी॥४॥

तुम बड़े महलों और सुंदर स्त्रियों में मदहोश हो गए हो, तुमने ईश्वर के नाम को भूलकर अपना सारा जीवन व्यर्थ कर दिया है॥४॥

मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी
ओछा जनमु हमारा॥

हे प्रभ! मेरी जाति अर्थात् 'विकारों में लिपत, मेरा स्वभाव' विकारों की संगति के कारण निकृष्ट बन गया है और निकृष्ट विकारों की पांति अर्थात् वंश/कुल-माया (जिस के दूत पांचों विकार हैं) भी उत्यंत हीन है। इसी के कारण मेरा समूचा जीवन ही ओछा (निकृष्ट) बन गया है।

तुम सरनागति राजा राम चंद
कहि रविदास चमारा ॥५ ॥६ ॥ (अंग-६५९)

गुरु रविदास चमार फरमाते हैं - कि हे सृष्टि के सम्राट् (राजा), सुंदर (चांद) परमात्मा (राम), अर्थात् हे प्रभ- अब मैं तेरी शरण में आ गया हूँ॥५ ॥६ ॥

शब्द - 20

राग सोरठि बाणी भगत रविदास जी की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

चमरटा गांठि न जनई ॥
लोगु गठावै पनही ॥१ ॥ रहाउ ॥

मैं चमार शरीर रूपी जूती को गाँठना अर्थात् पदार्थों

के साथ प्रीत लगाना नहीं जानता। लोग मेरे पास शरीर रूपी जूती को गँठवाने आते हैं, पर मैं केवल प्रभ के साथ जोड़ने का काम करता हूँ॥१ ॥ रहाउ ॥

आर नही जिह तोपउ ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१ ॥

मेरे पास न तो वह तीक्ष्ण आर (विकारों से उपजी चालाक बुद्धि) है, जिससे मैं धोखेबाज़ी का तीर चलाना सीखूं। न ही मेरे पास 'रंबी' है अर्थात् कोई तर्क-वितर्क वाली विद्या है, जिससे उलटी-सीधी बातें करके लोगों को बहकाऊं यां ठगूँ॥१ ॥

लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२ ॥

लोग शरीर को पदार्थक लालच से गांठ-गांठ कर दुर्दशाग्रस्त हो रहे हैं परन्तु मैं शरीर को इस प्रकार गांठना त्याग कर ही प्रभु तक पहुंचा हूँ।।२।।

रविदास जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३ ॥७ ॥
(अंग-६५९)

गुरु रविदास जी दृढ़ाते हैं कि मैं पदार्थक लालचों को त्याग कर प्रभु स्मरण में मगन हूँ। मेरा यमों के साथ कोई नाता नहीं रहा है।।३।।७।।

शब्द - 21

धनासरी भगत रविदास जी की

१ॐ सतिगुर प्रसादि॥

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि

अब पतीआरु किआ कीजै॥

हे प्रभ! मेरे जैसा कोई नम्र नहीं है और आपके जैसा कोई दयालु नहीं है। अब आप मेरी परीक्षा न लें।

बचनी तोर मोर मनु मानै

जन कउ पूरनु दीजै॥१॥

हे प्रभ! आपके ब्रह्म विचार मेरे मन को भाते हैं, कृपया अपने सेवक को पूर्ण ज्ञान प्रदान करें॥१॥

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने॥

कारन कवन अबोल॥ रहाउ॥

हे प्रभ! मैं आपके प्रति समर्पित हूँ, पर क्या कारण

है कि आप मुझसे बात नहीं करते?॥१॥ रहाउ॥

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ

इहु जनमु तुम्हारे लेखे॥

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभ! कई जन्म हो गए आपसे बिछुड़े हुए। यह जन्म मैंने आपके लिए समर्पित कर दिया है।

कहि रविदास आस लगि जीवउ

चिर भइओ दरसनु देखे॥२॥१॥ (अंग-६९४)

बहुत समय हो गया है कि मैंने आपके दर्शन किए। मैं इसी आशा में जीवित हूँ कि कब आपके दर्शन होंगे॥२॥१॥

शब्द - 22

धनासरी भगत रविदास जी की

१ॐ सतिगुर प्रसादि॥

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो

स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ॥

हे प्रभ! मेरा चित्त हमेशा आपका स्मरण करता

रहे और मेरी आँखें आपका दर्शन करती रहें। मेरे कान आपके विचारों वाली वाणी से पूर्ण रहें।

मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥१ ॥

मेरा मन भंवरा बना रहे, आपके विचार मेरे हृदय में बसे रहें और मेरी जीभ आपके अमृत वचन द्वारा प्रभ का नाम उच्चारित करती रहे ॥१ ॥

मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१ ॥ रहाउ ॥

मेरी प्रीति (भक्ति) प्रभ से कहीं कम न हो, क्योंकि मैंने इसे अपने जीवन के सर्वोच्च मूल्य के रूप में प्राप्त किया है। हे प्रभ! मेरी इस प्रीति की रक्षा करें ॥१ ॥ रहाउ ॥

साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥

हे प्रभ! यह प्रीति साध-संगत के बिना उत्पन्न नहीं होती और भाव (ज्ञान) के बिना आपकी भक्ति संभव नहीं है।

कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ
पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२ ॥२ ॥

(अंग-६९४)

गुरु रविदास जी प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभ! मैंने केवल आपसे प्रेम पाया है, आप उसका सम्मान रखें ॥२ ॥२ ॥

शब्द - 23

धनारसी भगत रविदास जी की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु
झूठे सगल पासारे ॥१ ॥ रहाउ ॥

गुरु रविदास जी प्रचलित आरती की जगह अपनी नई, शुद्ध, विश्वव्यापी आरती मानवता को प्रदान करते हुए फरमाते हैं कि हे हरि (प्रभ)! अज्ञान लोग मूर्तियों की आरती करते हैं, पर मेरे लिए आपकी आरती केवल आप का नाम ही है। (नाम का अर्थ है परमात्मा

और उसका आदेश, परमात्मा को स्वीकार करना, उसका स्मरण करना, उसकी चेतना करना) और नाम का स्मरण ही तीर्थों का स्नान है। आपके नाम के बिना सब कुछ केवल झूठ का प्रदर्शन और लोक दिखावा है॥१ ॥ रहाउ॥

नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे॥

मेरे लिए आपका नाम ही आसन है, चंदन पीसने का पत्थर और नाम ही केसर के छींटे देने जैसा है।

नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे॥१ ॥

आपके नाम का जाप ही मेरे लिए जल और चंदन है और मैं नाम रूपी जल और चंदन घसा कर आपको अर्पित करता हूँ॥१ ॥

नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥

हे प्रभ! आपका नाम ही दीपक और वह बत्ती है। नाम रूपी तेल ही मैं उस दीपक में डालता हूँ।

नाम तेरे की जोति लगाई भइओ
उजिआरो भवन सगलारे॥२ ॥

इस प्रकार मैंने केवल आपके नाम की ही जोत जगाई है, जिससे पूरे ब्रह्मांड में प्रकाश फैल गया है॥२ ॥

नामु तेरो तागा नामु फूल माला
भार अठारह सगल जूठारे॥

आप का नाम ही धागा और फूलों की माला है। आप के नाम के मुकाबले में सारी वनस्पति के अठारह भार जूठे हैं।

तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ
नामु तेरा तूही चवर ढोलारे॥३ ॥

हे प्रभ! मैंने जो कुछ भी उत्पन्न किया है, वह सब आपका ही है, मैं उसे आपको कैसे भेंट कर सकता हूँ? यदि मैं आपकी उत्पन्न की हुई सामग्री आपको ही अर्पित करता हूँ, तो मैंने अपने पास से आप को क्या अर्पित किया? इसलिए मैं आपको आपके नाम का ही चंवर झुलाता हूँ॥३ ॥

दस अठा अठसठे चारे खाणी
इहै वरतणि है सगल संसारे ॥

सारा संसार अठारह पुराणों, अठारह तीर्थों के स्नान को पुण्य कर्म समझकर जन्म के चार प्रकार के स्त्रोतों की योनियों में भटक रहा है।

कहै रविदासु नामु तेरो आरती
सतिनामु है हरि भोग तुहारे ॥४ ॥३ ॥

(अंग-६९४)

परंतु गुरु रविदास जी दृढ़ता से फरमाते हैं कि हे प्रभ! मेरे लिए आपका नाम ही सच्ची आरती है और मैं केवल सतिनाम के स्मरण का ही आपको भोग अर्पित करता हूँ॥४ ॥३ ॥

शब्द - 24

जैतसरी बाणी भगता की
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

नाथ कछूअ न जानउ ॥
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे प्रभ! मैं अज्ञानी हूँ, क्योंकि मेरा मन माया के हाथों में बिक गया है॥१ ॥ (रहाउ) ।।

तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥
हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१ ॥

हे प्रभ! आप जगत के गुरु और मालिक कहे जाते हैं और हम कलियुगी (आपकी याद को भूलकर समय व्यतीत करने वाले) विषयी जीव हां॥१ ॥

इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२ ॥

काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार आदि इन पाँचों विकारों ने मेरा मन बिगाड़ दिया है, जो हर पल मुझे आपसे दूर कर रहे हैं॥२ ॥

जत देखउ तत दुख की रासी ॥
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३ ॥

मैं जहाँ भी देखता हूँ, विकारों की विशाल शक्ति के कारण सभी लोक दु:खी है, फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता, भले ही वेद और शास्त्र इसकी गवाही देते हैं॥३ ॥

गोतम नारि उमापति स्वामी ॥
सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥४ ॥

इन विकारों में फंस कर इन्द्र ने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के साथ व्यभिचार किया, गौतम के श्राप से इन्द्र के तन पर सहस्त्रों भग (स्त्री के गुप्त अंग) फूट पड़े। भगवान ब्रह्मा कामवश अपनी ही पुत्री पर मोहित हुआ तो भगवान शिव ने क्रोध में उसका शीश काट दिया।।४।।

इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥
बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५ ॥

भले ही उपरोक्त वर्णन से देवताओं आदि के विकारों दुर्दशाग्रस्त होने का पता चल गया है कि दुष्ट विकार जीव को बहुत बुरी तरह से मारते हैं, फिर भी मेरा मन बड़ा निर्लज्ज है कि यह अब तक हार नहीं मानता ॥५ ॥

कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥
बिन रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६ ॥ १ ॥

(अंग-७१०)

गुरु रविदास जी कहते हैं कि इन विकारों से मुक्ति

पाने के लिए क्या करूँ, कहाँ जाऊँ ? फिर स्वयं उत्तर देते हैं कि एक ब्रह्म गुरु अर्थात् प्रभ के बिना किसी और की शरण नहीं ली जा सकती ॥६ ॥१ ॥

शब्द - 25

राग सूही बाणी श्री रविदास जीउ की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सह की सार सुहागनि जानै ॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥

साधक रूपी स्त्री ही अपने पति परमात्मा की कदर जानती है। इस समझ के साथ वह अपने अहंकार को छोड़कर सुख मानती है।

तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१ ॥

वह अपना तन और मन प्रभु को अर्पित कर देती है और प्रभ बिना किसी और का आश्रय नहीं देखती ॥१ ॥

सो कत जानै पीर पराई ॥
जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१ ॥ रहाउ ॥

जिन्होंने प्रभ के साथ प्रेम नहीं किया, वे उसके प्रेम के बिरहा की पीड़ाएं कैसे जान सकती हैं? ॥१ ॥ (रहाउ)

दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥
जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥

जिन्होंने प्रभ के साथ प्रेम नहीं किया, भक्ति नहीं की, वे लोक और परलोक में दुखी होती हैं।

पुर सलात का पंथु दुहेला ॥
संगि न साथी गवनु इकेला ॥२ ॥

प्रभ के मिलन के बिना पुर सलात (जीवन के कठिन मार्ग) को बिना साथी के ही पार करना पड़ता है ॥२ ॥

दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥

मैं दुखी और पीड़ित होकर तेरे दर पर आया हूँ। तेरे दर्शन की तीव्र इच्छा है, पर आप की ओर से कोई उत्तर नहीं मिल रहा।

कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥

जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३ ॥१ ॥

(अंग-७९३)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभ! मैं तेरी शरण में हूँ, तुम जैसे चाहो वैसे मुझे मुक्ति प्रदान करो ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 26

राग सूही बाणी श्री रविदास जीउ की ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥

जैसे दिन उदय होता और छिप जाता है, वैसे ही जीव जन्म लेता और मर जाता है। इस संसार से सभी को प्रस्थान करना है, कोई स्थायी नहीं है।

संगु चलत है हम भी चलना ॥
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥१ ॥

संगी-साथी जा रहे हैं, हमें भी एक दिन जाना ही पड़ेगा। मार्ग दूर का है, पर मौत शीश पर खड़ी है;

पता नहीं मौत कब अपना वार कर लेगी ॥१ ॥

किआ तू सोइआ जागु इआना ॥

तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१ ॥ रहाउ ॥

ऐ मूर्ख मनुष्य! तू अज्ञानता की नींद में सोया, अपने जीवन और जगत को सत्य मान रहा है ॥१ ॥ रहाउ ॥

जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥

सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥

तू भोजन (रोटी) के लिए प्रभ को भूल बैठा है, पर हे भाई प्रभ ने जिस भी जीव को जन्म दिया है, उसके लिए भोजन के भंडार भी पैदा किए हैं। भोजन का प्रबंध प्रभ हर जीव में बैठा स्वयं करता है।

करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥

हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२ ॥

हे जीव! अहंकार छोड़कर प्रभ की अराधना कर और समय पर प्रभ के नाम को अपने हृदय में संजो ले ॥२ ॥

जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥

सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥

तेरा जीवन समाप्त होता जा रहा है, पर तू अपना अगला मार्ग तैयार नहीं कर पाया है। वृद्धावस्था का संध्या समय आ गया है और चारों ओर अंधकार छा जाएगा।

कहि रविदास निदानि दिवाने ॥

चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥३ ॥२ ॥

(अंग-७९३)

गुरु रविदास जी दृढ़ करते हैं कि हे अज्ञानी! तू प्रभ का स्मरण क्यों नहीं करता? यह दुनिया तो नश्वर हो जाने वाली है ॥३ ॥२ ॥

शब्द - 27

राग सूही बाणी श्री रविदास जीउ की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ऊचे मंदर साल रसोई ॥

एक घरी फुनि रहनु न होई ॥१ ॥

ऐ मनुष्य! तू अपने जीवन के असली उद्देश्य को भूलकर ऊँचे महल और बड़ी रसोई बनाकर अहंकार

करता है। अंत में इन सब में तुझे एक क्षण भी ठहरना नहीं मिलेगा ॥१ ॥

इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥
जलि गइओ घासु
रलि गइओ माटी ॥१ ॥ रहाउ ॥

यह शरीर तो सूके घास की छप्परी के समान है, जो आग लगने पर पल भर में राख होकर मिट्टी में मिल जाती है ॥१ ॥ रहाउ ॥

भाई बंध कुटंब सहेरा ॥
ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥२ ॥

जब मनुष्य का देहांत हो जाएगा, तो रिश्तेदार, परिवार और मित्र जल्दी से जल्दी उसे घर से बाहर निकालने के लिए कहेंगे ॥२ ॥

घर की नारि उरहि तन लागी ॥
उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥३ ॥

यहाँ तक कि हमेशा साथ रहने वाली तेरी पत्नी भी तुझे 'मर गया, मर गया' कहकर दूर हो जाएगी ॥३ ॥

कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥
हम तउ एक राम कहि छूटिआ ॥४ ॥३ ॥

(अंग-७९४)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि सारा जगत मोह-माया में ठगा जा रहा है परंतु मैं तो केवल एक प्रभ की भक्ति करके बच गया हूँ ॥४ ॥३ ॥

शब्द - 28

बिलावलु बाणी रदिवास भगत की
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
असट दसा सिधि कर तलै
सभ क्रिपा तुमारी ॥१ ॥

मेरी निर्धनता देखकर सभी हँसते थे, पर हे प्रभ! तेरी कृपा से मेरी तली पर अठारह सिद्धियां हैं, अर्थात् प्रत्येक सौगात है ॥१ ॥

तु जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥
सगल जीअ सरनागती

प्रभ पूरन काम ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे मुक्तिदाता! तू जानता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ, पर जैसे तूने मुझ पर कृपा की है, वैसे ही जो भी तेरी शरण में आते हैं, तू उन पर कृपा करता है ॥१ ॥ रहाउ ॥

जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२ ॥

जो भी तेरी शरण में आते हैं, उन पर पापों का भार नहीं लगता। तेरी शरण में आए सभी अच्छे-बुरे जीव तेरी कृपा द्वारा भवसागर से पार हो जाते हैं ॥२ ॥

कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३ ॥१ ॥
(अंग-८५८)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे प्रभ! तेरी दया और कृपा का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। बस यही कह सकते हैं कि तेरे जैसा केवल तू ही है, और तेरी तुलना (उपमा) किसी और से नहीं की जा सकती ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 29

बिलावल बाणी रविदास भगत की
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

जिह कुल साधु बैसनो होइ ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु
बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१ ॥ रहाउ ॥

जिस कुल में प्रभ का भक्त जन्म लेता है, वह उच्च या नीची जाति, अमीर या गरीब होने के कारण नहीं, बल्कि पवित्र कर्मों के कारण संसार में शोभा पाता है ॥१ ॥ रहाउ ॥

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री
डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥

भले ही कोई ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय, मरासी, चांडाल या मलीन मन वाला हो, उनमें सभी में प्रभ ही वास करता है।

होइ पुनीत भगवंत भजन ते
आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१ ॥

इसलिए किसी भी जाति का जब व्यक्ति प्रभ की

भक्ति करके पवित्र हो जाता है वो स्वयं का उद्धार तो करता ही है यहां तक कि वह अपने ददयाल और ननिहाल दोनों कुलों का भी उद्धार कर देता है॥१ ॥

धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ
धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ॥

वे गाँव, स्थान और परिवार पूर्ण जगत में धन्य होते हैं, जहाँ प्रभ का भक्त जन्म लेता है।

जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस
होइ रस मगन डारे बिखु खोइ॥२ ॥

जिस ने प्रभ-प्रेम का अमृत पिया, बाकी सुखों को त्याग दिया और विकारों का नाश किया है॥२ ॥

पंडित सूर छत्रपति राजा
भगत बराबर अउरु न कोइ॥

बड़ा विद्वान, वीर योद्धा, चक्रवर्ती राजा या कोई और मनुष्य प्रभ के भक्त के बराबर भी नहीं है।

जैसे पुरैन पात रहै जल समीप
भनि रविदास जनमे जगि ओइ॥३ ॥२ ॥

(अंग-८५८)

गुरु रविदास जी का कथन है कि जैसे चौपत्ती का पौधा अन्य पौधों से अलग और निराला (अनोखा) होता है, वह केवल पानी के निकट रह सकता है, उसी प्रकार प्रभ-भक्त भी निराले (अनोखे) होते हैं, जो केवल प्रभ के चरणों में रहकर ही जीवित रह सकते हैं॥३ ॥२ ॥

शब्द - 30

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २
ੴ सतिगुर प्रसादि॥

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥

हे संसार के लोगो! हर समय मुक्तिदायक प्रभ का नाम जपो। इसके बिना यह शरीर व्यर्थ चला जाता है।

सोई मुकंदु मुकति का दाता॥
सोई मुकंदु हमरा पित माता॥१ ॥

वही प्रभ मुक्ति का दाता है और हमारा माता-पिता है॥१ ॥

जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१ ॥ रहाउ ॥

जो मनुष्य जीवित रहते हुए प्रभ से जुड़ा रहता है, मरने के समय भी उसकी चेतना प्रभ से जुड़ी रहती है; उस मनुष्य को प्रभ प्राप्त होता है ॥१ ॥ रहाउ ॥

मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥
जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥

प्रभ के नाम का जाप मेरे प्राणों का आधार है, जिससे माथे पर आभामूर (प्रभ का प्रकाश)चमकने लगता है।

सेव मुकंद करै बैरागी ॥
सोई मुकंदु दुरबल धनु लाधी ॥२ ॥

नाम का जाप सेवक को वैराग्यशील बना देता है और आत्मिक रूप से गरीब को आत्मिक शक्ति रूपी धन प्राप्त होता है ॥२ ॥

एक मुकंदु करै उपकारु ॥
हमरा कहा करै संसारु ॥

यदि प्रभ ही हमारे प्रति कृपालु हो जाता है, तो

फिर संसार हमारा क्या बिगाड़ सकता है?

मेटी जाति हूए दरबारि ॥
तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३ ॥

मुझे तेरे चरणों में स्थान मिला है; तू ही युगों-युगों से अपने सेवकों को पार लगाता आ रहा है ॥३ ॥

उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥
करि किरपा लीने कीट दास ॥

नाम के जाप से मेरे मन में ज्ञान का प्रकाश हो गया है, और कृपा करके तूने मुझे अपना सेवक बना लिया है।

कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥
जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४ ॥१ ॥

(अंग-८७५)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि अब मेरी तृष्णा समाप्त हो गई है। अब मैं उसके नाम-स्मरण में मग्न हूँ ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 31

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

जे ओहु अठसठि तीरथ न्हावै॥

जे ओहु दुआदस सिला पूजावै॥

जो व्यक्ति निंदक है, भले ही वह अठासठ तीर्थों का स्नान कर ले, बारह शिवलिंगों की पूजा करे।

जे ओहु कूप तटा देवावै॥

करै निंद सभ बिरथा जावै॥१॥

यदि वो लोक सेवा के लिए कुएं और तालाब बनवा दे–यदि वह सच्चे साधुओं की निंदा करता है तो उसकी यह सेवा व्यर्थ हो जाती है॥१॥

साध का निंदकु कैसे तरै॥

सरपर जानहु नरक ही परै॥१॥ रहाउ॥

सच्चे संतों की निंदा करने वाला कभी सफल नहीं हो सकता; उसके सिर पर नर्क का भार ही पड़ता है अर्थात् वह मुक्त नहीं हो सकता॥१॥ रहाउ॥

जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति॥

अरपै नारि सीगार समेति॥

यदि निंदक ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र जाकर स्नान करे, पत्नी हार–श्रृंगार कर दान दे।

सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै॥

करै निंद कवनै नही गुनै॥२॥

सताईस स्मृतियां अपने कानों से सुने परंतु यदि वह संतों की निंदा करता है तो इस का कोई लाभ नहीं होता।।२।।

जे ओहु अनिक प्रसाद करावै॥

भूमि दान सोभा मंडपि पावै॥

यदि वह देवताओं को प्रसाद का भोग अर्पित करे, भूमि–मंदिर दान करके महिमा पाए।

अपना बिगारि बिरांना सांढै॥

करै निंद बहु जोनी हांढै॥३॥

अपना काम बिगाड़कर दूसरों का भला करे, पर फिर भी यदि वह संतों की निंदा करता है, तो वह जूना अर्थात् आवागवन में भटकता है॥३॥

निंदा कहा करहु संसारा ॥
निंदक का परगटि पाहारा ॥

हे संसार के लोगो! आप निंदा क्यों करते हैं? निंदक का पता हमेशा चल ही जाता है; निंदक कभी भी छिपा नहीं रह सकता।

निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४ ॥२ ॥
(अंग-८७५)

गुरु रविदास जी उपदेश देते हैं कि बहुत सोच-विचार करने के बाद यह निश्चय हो जाता है कि निंदक पापी होता है और हमेशा नरक में जाता है अर्थात् वह मुक्त नहीं होता ॥४ ॥२ ॥

शब्द - 32

रामकली बाणी रविदास जी की
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ
अनभउ भाउ न दरसै ॥

हम प्रभ का नाम पढ़ते भी है, सुनते भी है और विचार भी करते है, पर फिर भी उसे उस प्रभ के दर्शन नहीं होते।

लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे
जउ पारसहि न परसै ॥१ ॥

दर्शन कैसे होंगे? क्योंकि (हम विकारों में फंसकर प्रभ के ज्ञान से बिना यह सब करते हैं।) जब तक लोहा पारस से न छुए, तब तक वह सोना नहीं बन सकता ॥१ ॥

देव संसै गांठि न छूटै ॥
काम क्रोध माइआ मद मतसर
इन पंचहु मिलि लूटे ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे प्रभ! मेरे संदेह और भ्रम खुल नहीं पाते। काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार आदि विकारों ने मुझे लूट लिया है ॥१ ॥ रहाउ।

हम बड कबि कुलीन हम पंडित
हम जोगी संनिआसी ॥

हम अहंकार में कहते हैं कि हम बड़े कवि, उच्च

कुल वाले, योगी और संन्यासी हैं।

गिआनी गुनी सूर हम दाते

इह बुधि कबहि न नासी ॥२ ॥

हम यह भी कहते हैं कि हम ज्ञानी, गुणवान, वीर और दानी हैं। यह बुरी सोच हमारे क्रम में से नष्ट नहीं होती ॥२ ॥

कहु रविदास सभै नही समझसि

भूल परे जैसे बउरे ॥

गुरु रविदास जी के पावन वचन हैं कि सभी लोग समझ नहीं रहे और पागलों की तरह भटके हुए हैं।

मोहि अधारु नामु नाराइन

जीवन प्रांन धन मोरे ॥३ ॥१ ॥ (अंग-९७३)

परंतु मुझे तो प्रभ के नाम का आश्रय (आधार) है, जो मेरे जीवन का प्राण और धन है ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 33

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की

१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा

माथै छत्रु धरै ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे प्रभ! ऐसी बखशिश तेरे बिना और कौन कर सकता है। गरीबों को मान देने वाले प्रभ, तूने मेरे सिर पर छत्र झुलाकर मुझे सम्मान दिया है ॥१ ॥ रहाउ ॥

जा की छोति जगत कउ लागै

ता पर तुहीं ढरै ॥

जिसकी अर्थात् अछूतों की छाया से जगत अपवित्र हो जाता है। हे प्रभ उन अछूतों पर भी तुम मुग्ध हो जाते हो।

नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु

काहू ते न डरै ॥१ ॥

नीचों को उच्च पद देने में तू किसी से नहीं डरता

(और तू उन लोगों को भी निर्भय बना देता है, जो तेरा स्मरण करते हैं॥१ ॥

नामदेव कबीरु तिलोचनु
सधना सैनु तरै॥

(गुरु) नामदेव जी, (गुरु) कबीर जी, (गुरु) त्रिलोचन जी, (गुरु) सधना जी और (गुरु) सैनु जी तेरी कृपा से उच्च हुए। (हे प्रभ आप की भक्ति और बखशिश से वे उच्च और निर्भय होकर संसार में क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आए।)

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु
हरि जीउ ते सभै सरै॥२ ॥१ ॥ (अंग-११०६)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि हे संतजनो! सुनो, वह प्रभ सब कुछ करने में सक्षम है॥२ ॥१ ॥

शब्द - 34

रागु मारू बाणी रविदास जीउ की
ੴ सतिगुर प्रसादि॥

सुख सागर सुरितरु चिंतामनि
कामधेन बसि जा के रे॥

यह शब्द कुछ बदलावों के साथ दूसरी बार मारू राग, जो कि युद्ध का राग है, में आया है। इसमें गुरु रविदास जी ब्राह्मणों के सताए गए और लताड़े गए लोगों को संबोधित करते हुए कहते हैं, कि जिस सुखों के सागर प्रभ के वश में है, उसके पास स्वर्ग के पाँच रुख, चिंतामणि और कामधेनु हैं।

चारि पदारथ असट महा सिधि
नव निधि कर तल ता कै॥१ ॥

उसी प्रभ की हथेली पर चार पदार्थ, अठारह सिद्धियाँ और अनगिनत खजाने हैं। इसलिए यह सब कुछ प्रभ के हाथ में है॥१ ॥

हरि हरि हरि न जपसि रसना॥
अवर सभ छाडि बचन रचना॥१ ॥ रहाउ॥

इसलिए आप वेद, पुराण आदि और बाकी रचित ग्रंथों की विचारधारा और कही गई बातों को छोड़कर पारब्रह्म प्रभ का स्मरण करें॥१ ॥ रहाउ॥

नाना खिआन पुरान बेद बिधि
चउतीस अछर माही॥

पुराणों, वेदों आदि की कथाएँ, विधियाँ और देवनागरी के चौतीस अक्षरों में रचित साहित्य केवल वाक रचना हैं।

बिआस बीचारि कहिओ परमारथु
राम नाम सरि नाही ॥२ ॥

वेदों के खोजकर्त्ता महर्षि वेद व्यास जी ने विचार कर यह निष्कर्ष निकाला है कि ये तो प्रभ स्मरण के बराबर भी नहीं हैं ॥२ ॥

सहज समाधि उपाधि रहत होइ
बडे भागि लिव लागी।

वे बड़े भाग्यशाली हैं, जिनकी चेतना प्रभ का ज्ञान प्राप्त करके, उसके स्मरण में लीन हो गई है।

कहि रविदास उदास दास मति
जनम मरन भै भागी ॥३ ॥२ ॥ (अंग-११०६)

गुरु रविदास जी कहते हैं कि उनके मन में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न हो जाता है और वे जन्म-मरण के डर से मुक्त हो जाते हैं। ऐसी निडर आत्मा योद्धा बनकर क्रांति मचा देती है ॥३ ॥२ ॥

शब्द - 35

राग केदारा बाणी रविदास जीउ की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

खटु करम कुल संजुगतु है
हरि भगति हिरदै नाहि ॥

यदि कोई उच्च कुल का ब्राह्मण छह कर्म करे, लेकिन उसके हृदय में प्रभ प्रेम न हो।

चरनारबिंद न कथा भावै
सुपच तुलि समानि ॥१ ॥

और यदि उसे प्रभ की कथा अच्छी नहीं लगती, तो वह चंडाल अर्थात् नीच व्यक्ति के समान है ॥१ ॥

रे चित चेति चेत अचेत ॥
काहे न बालमीकहि देख ॥

हे मेरे निकम्मे मन! तुम जागते-सोते प्रभ का स्मरण कर तू महर्षि वाल्मीकि जी की ओर क्यों नहीं देखते?

किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ
राम भगति बिसेख ॥१ ॥ रहाउ ॥

महर्षि वाल्मीकि जी, जो साधारण कुल के होते हुए भी, प्रभ भक्ति करके अमर पद को प्राप्त हुए॥१॥ रहाउ॥

सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु॥
लोगु बपुरा किआ सराहै
तीनि लोक प्रवेस॥२॥

नीच कहा जाने वाला सुआन सत्रु कृष्ण अर्थात् प्रभ से प्रति प्रेम रखता था, लोग उसकी क्या प्रशंसा कर सकते थे? उसकी महिमा तो तीनों लोकों में प्रकट हो रही है॥२॥

अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु
गए हरि कै पास॥

बुरी बुद्धि वाले अजामल (पापी), पिंगला (वैश्य), लुभत (शिकारी), कुंचर गजराज (हाथी) आदि प्रभु स्मरण द्वारा मुक्त हो गए।

ऐसे दुरमति निसतरे
तू किउ न तरहि रविदास॥३॥१॥

(अंग-११२४)

हे (गुरु) रविदास! यदि ऐसे बुरी बुद्धि वाले भी प्रभ के स्मरण द्वारा भव सागर को पार हो जाते हैं, तो तुम क्यों नहीं पार हो सकते?॥३॥१॥

शब्द - 36

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २
ੴ सतिगुर प्रसादि॥

बिनु देखे उपजै नही आसा॥
जो दीसै सो होइ बिनासा॥

प्रभ दृष्टिगोचर नहीं देता, इसलिए उसे प्राप्त करने की आशा नहीं बनती। वास्तविक्ता यह भी है कि दिखने वाली हर चीज़ नश्वर है।

बरन सहित जो जापै नामु॥
सो जोगी केवल निहकामु॥१॥

परंतु प्रभ अविनाशी हैं। जो मनुष्य सृष्टि के नियमों का सम्पूर्ण ज्ञान लेकर प्रभ का जाप करता है, वही योगी (भक्त) निःस्वार्थ होता है॥१॥

परचै रामु रवै जउ कोई ॥
पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१ ॥ रहाउ ॥

जब साधक प्रभ का स्मरण करता है, तो जैसे लोहे को पारस छूते ही सोना बन जाता है, उसी प्रकार साधक प्रभ का स्पर्श प्राप्त करते ही दुखों, इच्छाओं और विकारों से रहित प्रभ रूप बन जाता है॥१ ॥ रहाउ॥

सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥
बिनु दुआरै त्रै लोक समाइ ॥

वही मुनि है, जो मन के दुखों को मिटाकर इच्छाओं पर नियंत्रण कर लेता है और सृष्टि में व्याप्त प्रभ के साथ एकरूप हो जाता है।

मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥
करता होइ सु अनभै रहै ॥२ ॥

दुनिया मन के विकारों और इच्छाओं के पीछे दुखी होकर तड़प रही है, परंतु जो प्रभ का स्मरण करते हुए, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह उसका रूप बन जाता है॥२ ॥

फल कारन फूली बनराइ ॥
फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥

फल की प्राप्ति के लिए पहले फूल खिलते हैं, जब फल लग जाता है, तो फूल झड़ जाते हैं।

गिआनै कारन करम अभिआसु ॥
गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३ ॥

इसी प्रकार साधक इच्छाओं और विकारों का नाश करने के लिए ज्ञान का अभ्यास करता है। जब प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तो विकारों और इच्छाओं का नाश हो जाता है॥३ ॥

घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥
जीवत मुकत सदा निरबान ॥

इस प्रकार समझदार स्त्री घी प्राप्त करने के लिए दही को मथती है, और जब घी बन जाता है तो मथना बंद कर देती है। साधक भी इसी तरह अभ्यास के द्वारा विकारों और इच्छाओं पर काबू पाकर ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त करता है। यह ज्ञान निर्वाण पद की प्राप्ति प्रदान कराता है।

कहि रविदास परम बैराग ॥
रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४ ॥१ ॥

(अंग-११६७)

इसी कारण गुरु रविदास जी अपने-आप से कहते हैं। 'हे अभागे ! तू इस परम वैराग्य की प्राप्ति के लिए प्रभ का स्मरण क्यों नहीं करता?' ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 37

बसंतु बाणी रविदास जी की
१ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥
पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥

हे मेरी काया (शरीर) ! तुझे समझ नहीं, तू अमीरी और ठाठ-बाट देखकर अकड़ती फिरती है।

गरबवती का नाही ठाउ ॥
तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥१ ॥

तुझे पता नहीं कि यहाँ अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं, तेरे सिर पर काल चक्र लगा रहा है ॥१ ॥

तू कांइ गरबहि बावली ॥
जैसे भादउ खूंबराजु
तू तिस ते खरी उतावली ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे बावरी काया ! तू अहंकार क्यों करती है? तू तो भाद्र माह में उत्पन्न हुई खुम्भ की भांति शीघ्र नाश होने वाली है ॥१ ॥ रहाउ ॥

जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ॥
तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥

हिरन को यह रहस्य नहीं पता कि वह सुगंध उसके शरीर से आ रही है, जिसे वह बाहर ढूँढता फिर रहा है।

अप तन का जो करे बीचारु ॥
तिसु नही जमकंकुर करे खुआरु ॥२ ॥

इस प्रकार जो मनुष्य इस बात का विचार करता है कि प्रभ ने उस के हृदय के भीतर से ही प्राप्त होना है, वह मनुष्य जमदूतों (यमदूतों) के आधिपत्य से बच जाता है ॥२ ॥

पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥

ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥

तू अपने पुत्र और पत्नी के अहंकार में फँसकर प्रभ को भूल बैठा है, परन्तु प्रभ ने किए कर्मों का लेखा लेना ही है।

फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥

पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३ ॥

मृत्यु उपरांत संबंधियों ने साथ नहीं जाना, तो किसको प्यारा-प्यारा कहकर पुकारेगा ॥३ ॥

साधू की जउ लेहि ओट ॥

तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥

जो मनुष्य सच्चे साधु (जो साधु परमात्मा से अभेद हो गया हो), की शरण लेता है, उस के सारे पाप मिट जाते हैं।

कहि रविदास जो जपै नामु ॥

तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥ ४ ॥१ ॥

(अंग-११९६)

गुरु रविदास जी फरमाते हैं कि जो परब्रह्म (प्रभ) का स्मरण करते हैं, उनका विकारी स्वभाव मिट जाता

है और उनके जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है, और वे योनियों में नहीं पड़ते ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 38

मलार बाणी भगत रविदास जी की

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥

रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१ ॥ रहाउ ॥

हे नगर के ब्राह्मण जनो ! मेरी जाति चमार करके प्रसिद्ध है, जिससे मुझे आपके द्वारा प्रभ स्मरण का अधिकार नहीं, पर मेरे हृदय में प्रभ के गुण वास कर रहे हैं ॥१ ॥ रहाउ ॥

सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे

संत जन करत नही पानं ॥

जैसे शराब गंगा जल से बनाई जाए, तब भी संतजन उसे पीते नहीं हैं। उसी तरह, यदि ब्राह्मण अच्छे गुण खो दे, तो वह भी बुरा बन जाता है।

सुरा अपवित्र नत अवर जल रे

सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥१ ॥

इसके विपरीत, यदि शराब गंगा जल में मिल जाए, तो वह शराब नहीं रहती, बल्कि गंगा जल ही बन जाती है। इसी प्रकार, यदि कोई चमार प्रभ के गुण प्राप्त कर लेता है, तो वह प्रभ का ही रूप बन जाता है॥१ ॥

तर तारि अपवित्र कर मानीऐ रे
जैसे कागरा करत बीचारं॥

ताड़ के पेड़ से शराब बनने के कारण ताड़ के पेड़ और उससे बने कागज़ को अपवित्र माना जाता है।

भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे
पूजीऐ करि नमसकारं॥२ ॥

परंतु जब उस कागज़ पर प्रभ की भक्ति और उपमा लिख दी जाती है, तो उसे नमस्कार करके पूजा की जाती है॥२ ॥

मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता
नितहि बानारसी आस पासा॥

हिंदू धर्म के अनुसार मेरी जात चमड़े को काटना, छीलना और मृत पशु बनारस के आस पास प्रति दिन ढोना है।

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा॥३ ॥१ ॥
(अंग-१२९३)

फिर भी, मुझे प्रभ के दासों के दास (गुरु) रविदास को ब्राह्मणों के प्रधान धरती पर उपमन होकर प्रणाम करते है॥३ ॥१ ॥

शब्द - 39

मलार

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति
तास सम तुलि नही आन कोऊ॥

जो साधक प्रभ का स्मरण करता है, उसके बराबर न तो पद्मपति (विष्णु), न कवलपति (शिव) और न ही 'आन' है अर्थात् ब्रह्मा है।

एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ
आन रे आन भरपूरि सोऊ॥ १ ॥ रहाउ॥

परब्रह्म केवल एक है और वह अनेक रूप धारण करके सृष्टि के प्रत्येक कण में वास करता है ॥१ ॥ रहाउ ॥

जा कै भागवतु लेखिऐ अवरु नही पेखीऐ
तास की जाति आछोप छीपा ॥

(गुरु) नामदेव जी छींबा जात से संबंधित थे। उन्होंने केवल एक प्रभ की स्तुति और स्मरण लिखा, किसी और की पूजा नहीं की।

बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ
नाम की नामना सपत दीपा ॥१ ॥

वेदों के ज्ञाता महर्षि व्यास शुद्र थे और सनक, जिस का गुरु शूद्र था, इनके ग्रंथों में दर्ज है कि नाम के स्मरण की महिमा संसार में प्रसिद्ध है ॥१ ॥

जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि
मानीआहि सेख सहीद पीरा ॥

जिस (गुरु) कबीर के पूर्वज ईद व बकरीद के दिन गऊओं की बली देते थे और शेखों, शहीदों और पीरों की मान्यता करते थे।

जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी
तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२ ॥

उस (गुरु) कबीर के पिता ने भी उसी प्रकार ही किया परंतु उन के पुत्र (गुरु) कबीर से ऐसा नहीं हो सका (भाव उन्होंने केवल प्रभु का स्मरण ही किया, यह कर्म नहीं किये)। इस नाम स्मरण करके वह संसार में प्रसिद्ध हुए।।२।।

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि
अजहु बंनारसी आस पासा ॥

जिस की कुल के चमार आज तक बनारस के आस-पास मृत पशु ढोहते फिर रहे हैं।

आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३ ॥२ ॥

(अंग-१२९३)

हे प्रभु! तेरे स्मरण के कारण उस कुटुंब में से तेरे दासों के दास (गुरु) रविदास को ब्राह्मण धरती पर दंडवत होकर नमस्कार करते हैं।।३।।२।।

शब्द - 40

मलार

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥

साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥

गुरु जी के पावन वचन हैं कि प्रभु कौन सी भक्ति करने से मिलता है? फिर अपनी परीक्षा विधि का सारांश कहते हैं कि मुझे तो साध संगत में विचरने से प्रभु प्राप्ति हुई है ।।१ ।। रहाउ ।।

मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥

आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥१ ॥

साध संगत के बिना मेरा मैला अंत:करण पवित्र कैसे होता? कब तक मैं अज्ञानतावश सोया रहता? ।।१ ।।

जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥

झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥२ ॥

विकारों में पड़ कर जो पाप जोड़े थे, साध संगत

में जाकर समाप्त कर दिए हैं। जिस हृदय में पापों की दुकान डाली थी, उस का अब नाश हो गया है ।।२ ।।

कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥

जोई जोई कीनो

सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥१ ॥३ ॥

(अंग-१२९३)

गुरु रविदास जी पावन शब्द उच्चारते हैं कि प्रभ-प्राप्ति के पश्चात् जब पहले किए कर्मों की पड़ताल हुई तो जो-जो मैंने किया था, प्रत्यक्ष दिखाई दिया ।।३ ।।३ ।।

॥ सलोक ॥

हरि सो हीरा छाडि कै
करहि आन की आस ॥
ते नर दोजक जाहिगे
सति भाखै रविदास ॥२४२ ॥

(अंग - १३७७)

अपने असल तत्व पारब्रह्म-प्रभु को छोड़ कर जो मनुष्य किसी और (देवी, देवता आदि) से मुक्ति की आशा रखता है, गुरु रविदास जी पूर्ण सत्य वर्णन करते हैं कि ऐसे जीव नर्कों को प्राप्त होंगे अर्थात् मुक्त नहीं होंगे।।२४२।।

- सम्पूर्ण -